आमेर का इतिहास (कच्छवाह वंश)

- → नामकरण हुआ ⇒ राम के पुत्र कुश की संतान होने के कारण कच्छवाह कहलाए।
- → कुलदेवता ⇒ गोविन्ददेवजी
  - → मंदिर ⇒ जयपुर
  - → जयपुर के राजा इन्हें वास्तविक राजा मानते थे।
- → कुलदेवी ⇒ शिलामाता
  - → मंदिर ⇒ आमेर (जयपुर)
- → ध्येय वाक्य ⇒ यतो धर्मस्ततो जयते

आमेर रियासत

- ⇒ प्राचीन नाम ⇒ ढूंढाड़ प्रदेश।
- ⇒ प्रारम्भ में ⇒ ढूंढ नदी के किनारे
- ⇒ भाषा ⇒ ढूंढाड़ प्रदेश
- ⇒ इसके अन्तर्गत → जयपुर, दौसा

⇒ शासकों का क्रम

- संस्थापक ⇒ **दुल्हेराय** → राजधानी ⇒ दौसा
- ↓ **कोकिलदेव** ⇒ ~~बारह कोटड़ी प्रथा चलाई~~ → राजधानी ⇒ आमेर
- ↓ **पृथ्वीराज कच्छवाह** → बारह कोटड़ी प्रथा चलाई
- ↓ **भारमल** → अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- ↓ **भगवन्तदास**
- ↓ **मानसिंह** → उपाधि ⇒ फर्जन्द
- ↓ **मिर्जा जयसिंह**
- ↓ **सवाई जयसिंह** → राजधानी ⇒ जयपुर
- ↓ **ईश्वरीसिंह** → एकमात्र आत्महत्या करने वाला शासक

माधोसिंह
↓
प्रतापसिंह
↓
जगतसिंह ⇒ (बदनाम राजा)
↓
रामसिंह II
↓
माधोसिंह II
↓
मानसिंह II

कच्छवाह वंश

→ संस्थापक ⇒ दुल्हेराय, तेजकरण, धोलाराय
- → कौन था ⇒ ग्वालियर शासक सोढदेव का पुत्र था।
- → शादी हुई ⇒ सुजान कवर → पिता का नाम ⇒ रालणसी चौहान
  - कौन था ⇒ दौसा का शासक था
- → इसने 1137 में दौसा में बड़गुजरों को पराजित किया था
- → वंश की स्थापना की ⇒ 1137 ई. में दौसा के आस-पास
  राजधानी बनाई ⇒ दौसा
- → राजधानी बनाई ⇒ दौसा
- → मंदिर बनवाया ⇒ जमुवारामगढ़ (जमवाय माता जयपुर में)
  - → यह कच्छवाह वंश की कुलदेवी थी।

कोकिलदेव

- इसने हराया था ⇒ 1207 में आमेर के मीणाओं को
- नई राजधानी बनाई ⇒ आमेर (जयपुर) को 1207 में
- पुत्र था ⇒ पंचमदेव ⇒ इसने तराइन के II युद्ध 1192 में भाग लिया था।
  - मोहम्मद गौरी
    - जीत
  - पृथ्वीराज चौहान
    - हार
    - साथ दिया ⇒ पंचमदेव जो लड़ता हुआ मारा गया था

पृथ्वीराज कच्छवाह

- रानी द्वारा पुष्कर (अजमेर) में 1000 दीपक प्रतिदिन जलाती थी
- गुरु बनाया ⇒ कृष्णदास पयहरी → स्थापना की थी ⇒ गलता जी (जयपुर) रामानन्दी सम्प्रदाय की प्रमुख पीठ थी
  - इसमें राम-सीता को एकसाथ पूजा जाता है।
- भाग लिया ⇒ 1527 खानवा का युद्ध
  - बाबर
    - जीत
  - सांगा
    - साथ दिया ⇒ पृथ्वीराज कच्छवाह इसमें लड़ते हुए मारा गया।
- कुल पुत्र थे ⇒ 12 इसने पूरा राज्य विभाजित किया
- प्रथा चलाई ⇒ बारहकोटड़ी प्रथा चलाई

⇒ पृथ्वीराज कच्छवाह के पुत्र ⇒ रानी ⇒ बालाबाई ⇒ इसके कहने पर पूर्णमल को राजा बनाया

- भीमदेव
- पूर्णमल
- सांगा
- भारमल

भीमदेव — पूर्णमल: युद्ध हुआ

भीमदेव — पुर्णमल

युद्ध हुआ

शिखराद का युद्ध

- भीमदेव ⇒ जीत
- पूर्णमल ⇒ हार गया

- अकस्मात मृत्यु हो गई।
- **2 पुत्र**
  - **रतनसिंह**
    - इसे आसकरण ने भारमल के कहने पर जहर देकर मार दिया था।
  - **आसकरण**

भारमल (1547-72)

- राजा बनने की समस्या ⇒ गृहक्लेश में भतीजे आसकरण का विद्रोह
  ⇒ मीणा - गुर्जरों की लूट-पाट
- संतान ⇒ भगवन्तदास ⟶ पुत्र → मानसिंह कच्छवाह
  ⇒ हरकाबाई
- समकालीन बादशाह ⇒ अकबर (1556-1605)
- मुलाकात ⇒ अकबर और भारमल के मध्य
- समय ⇒ 1562 में सांगानेर (जयपुर) में
  - मुलाकात करवाई ⇒ चंगताई खाँ ने
- शादी करवाई ⇒ अकबर + हरकाबाई की
  - सांभर (जयपुर) में शादी हुई। 1562
  - पुत्र हुआ ⇒ सलीम / जहांगीर

⇒ राज० का पहला शासक जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार की।

⇒ राजस्थान का पहला शासक जिसने मुगलो से विवाहिक सम्बंध बनाए।
⇒ पहला मुगल - राजपूत विवाह था।

Note ⇒ अन्तिम मुगल - राजपूत विवाह ⇒ इन्द्रकुंवरी + फर्रुखशियर की था

भगवन्तदास (1573-89)

- ① संतान → मानसिंह
- ② मानबाई → शादी की → जहांगीर (सलीम) ⇒ 1585 में
  - → दूसरा मुगल राजपूत विवाह
  - → पुत्र ⇒ खुसरो
    - → इसकी हत्या ⇒ माँ मानबाई ने कर दी।
      - ⇒ उपनाम ⇒ पुत्रहन्ता माँ
    - → इसका साथ दिया
    - → सिक्खों के 5वें गुरु अर्जुनदेव
      - → इसको जहांगीर ने फांसी दी
- → यह मुगल दरबार में उपस्थित रहा
- Im → अकबर ने इसे प्रताप को समझाने तीसरे शिष्टमण्डल में भेजा था

Note ⇒ अकबर द्वारा प्रताप को समझाने के लिए क्रमश 4 शिष्टमण्डल भेजे ① जलाल खाँ ② मानसिंह ③ भगवन्तदास ④ टोडरमल
Trick ⇒ J M B D

मानसिंह (1589-1614)

- → जन्म ⇒ 1550 में आमेर में
- → 12 वर्ष की अवस्था में हरकाबाई के साथ अकबर की सेवा में भेजा
- → उपाधि ⇒ फर्जन्द कहा था ⇒ अकबर ने
  - → गोद लिया पुत्र
- → रानी का पुत्र जगतसिंह ⇒ बंगाल अभियान से लौटते हुए मृत्यु हो गई
  - → माँ ⇒ कनकावती ने इसकी याद में बनवाया

जगतशिरोमणि मंदिर (आमेर)

⇒ मूर्ति रखी ⇒ कृष्ण जी ⇒ यह वही मूर्ति है। जिसकी पूजा मीरा बाई करती है।

⇒ उपनाम ⇒ जयपुर / आमेर का खजुराहो

निर्माण करवाया ⇒ **आमेर का किला (जयपुर)**

→ इसका सबसे पुराना महल ⇒ **कदमी महल**

⇒ निर्माण ⇒ राजदेव

⇒ महत्व ⇒ यहा आमेर के राजाओ का राज्याभिषेक होता था।

⇒ दरबारी विद्वान ⇒ **पुण्डरीक विट्ठल** ⇒ किताब लिखी

⇒ रागमाला

⇒ रागमंजरी

⇒ राग चन्द्रोदय

⇒ इसे अकबर ने प्रताप को समझाने के लिए 2 शिष्टमण्डल मे भेजा (जून 1573)

⇒ अकबर ने मानसिंह को सेना देकर मेवाड अभियान पर भेजा और मानसिंह ने **अकबर का किला** (अजमेर) में शरण ली और हल्दघाटी युद्ध की योजना बनाई थी

↓

18 Jun 1576 - हल्दीघाटी युद्ध

महाराणाप्रताप → हार

मानसिंह → जीत

⇒ अकबर ने मानसिंह को अभियानों पर भेजा

- ⇒ काबुल अभियान ⇒ यहां मानसिंह ने 5 यवन कबीलों को हराया जिसके कारण आमेर की पताका पचरंगी हो गई थी
- ⇒ बिहार अभियान ⇒ यहां बिहार शासक पूरणमल को पराजित किया। यहां नगर बसाया ⇒ मानपुर कस्बा
- ⇒ बंगाल अभियान ⇒ यहां पूर्वी बंगाल शासक केदार को पराजित किया। इसने यहां नगर बसाया ⇒ अकबरपुर
  - ⇒ मानसिंह जस्सोर (बंगाल) से शिलामाता की मूर्ति लाया

note ⇒ आमेर में बनवाया ⇒ शीलामाता मंदिर (आमेर)
↳ कच्छवाह वंश की आराध्य देवी।

मिर्जा जयसिंह 1621-67

- ⇒ समकालीन बादशाह ⇒ शाहजहाँ (1628-58)
  - ↳ चारपुत्र → दारा, शुजा, मुराद, औरंगजेब ⇒ उत्तराधिकार युद्ध हुआ
    - ↓ 1658 धरमत का युद्ध M.P
      - दारा ↳ हार → मिर्जा जयसिंह साथ दिया
      - औरंगजेब ↳ जीत
- ⇒ नया बादशाह औरंगजेब (1658-1707)

1659 देवराई / दौराई का युद्ध
- औरंगजेब ↳ जीत → मिर्जा जयसिंह साथ
- दारा ⇒ हार

⇒ औरंगजेब ने शिवाजी के खिलाफ अभियान पर भेजा ⇒ मिर्जा जयसिंह
→ इन्होंने आत्मसमर्पण कर दिया।

⇒ 1665 - पुरन्दर की संधि
- मध्य हुआ ⇒ शिवाजी + मिर्जा जयसिंह
- ⇒ शिवाजी ने 35 दुर्ग में से 23 दुर्ग मुगलों को दिए।
- → औरंगजेब ने शिवाजी को धोखे से आगरा (U.P) में कैद किया
  ⇒ लेकिन शिवाजी भाग गया।
- → औरंगजेब ने मिर्जा जयसिंह को दक्षिण अभियानों पर भेज दिया।
- → मृत्यु ⇒ 1667 में बरहानपुर (M.P)

मिर्जा जयसिंह (1621-67) —पुत्र→ रामसिंह II (1667-82) —पुत्र→ विशनसिंह (1682-17)
- 2 पुत्र
  - जयसिंह II
  - विजय सिंह

सवाई जयसिंह (1700-43)
- → उपनाम
  - ⇒ चाणक्य
  - ⇒ सवाई उपाधि दी औरंगजेब ने
  - ⇒ राजराजेश्वर दी थी → मोहम्मदशाह रंगीला
- → दरबारी विद्वान
  - ⇒ पुण्डरीक रत्नाकर —ग्रंथ लिखा→ जयसिंह कल्पद्रुम
  - ⇒ पुण्डरीक सुधाकर → साहित्यसार संग्रह
  - ⇒ जगन्नाथ → सिद्धान्त सम्राट + सिद्धान्त कौस्तुभ

→ निर्माण ⇒ सिसोदिया रानी का बाग (जयपुर)

⇒ चन्द्रमहल / सिटी पैलेस (जयपुर)

→ यहा एशीया के 2 सबसे बड़े चांदी के पात्र रखे है। जो माधोसिंह II ने रखवाये।

यहा स्थित है ⇒ मुबारक महल ⇒ निर्माण ⇒ माधोसिंह II ने

→ प्रसिद्ध है ⇒ मेहमानबाजी के लिए

note ⇒ मुबारक महल (टोंक) जो ऊँट के बाल के लिए प्रसिद्ध है।

⇒ नाहरगढ दुर्ग - जयपुर ⇒ जयपुर का मुकुटमणि

⇒ जलमहल (जयपुर) ⇒ मानसागर झील पर बनवाया गया था।

⇒ इसने अश्वमेध यज्ञ करवाया था यह भारत का अन्तिम हिन्दु शासक जिसने अश्वमेध यज्ञ करवाया

⇒ इस यज्ञ में घोडा छोडा दीपसिंह कुम्भाणी ने भाण्डारेज (दौसा) में पकड़ा कुम्भाजी लड़ते हुऐ युद्ध में मारा गया था।

⇒ इसने नगर बसाया ⇒ जयपुर / जयनगर

→ समय ⇒ 18 nov 1727 को

→ नीव डाली ⇒ जगन्नाथ ने जौरावरसिंह गेट पर

→ वास्तुकार था ⇒ विद्याधर भट्टाचार्य

→ रंग रंगवाया ⇒ 1868 में रामसिंह II ने

⇒ स्टेनले रीड ने पुस्तक ⇒ The Royal town of India में pink city / गुलाबी नगरी कहा।

⇒ इसके समकालीन बादशाह ⇒
- औरंगजेब (1658-1707)
- बहादुरशाह I (1707-12)
- जहांदुरशाह (1712-13)
- फर्रुखशीयर (1713-1719)
- रफी उद दौला (1719)
- रफी उद दराज (1719)
- मोहम्मदशाह रंगीला (1719-48)

} सर्वाधिक मुगल बादशाहों का कार्यकाल देखनेवाला राज० का शासक था (बादशाह)

⇒ समकालीन बादशाह ⇒ औरंगजेब 2 पुत्र →
- आजम
- मुअज्जम

} उत्तराधिकार युद्ध हुआ।

1707 में जाजऊ / आजऊ का युद्ध
- **आजम** — सवाई जयसिंह ने साथ दिया → हार
- **मुअज्जम** → जीत

नया बादशाह बना ⇒ **मुअज्जम / बहादुरशाह I**
- इसने बदला लेने के लिए सवाई जयसिंह से आमेर की गद्दी छीनकर इसके छोटे भाई विजयसिंह / भीमाजी को सौंप दी।
- बहादुरशाह ने आमेर का नया नाम रखा ⇒ मोमिनाबाद / इस्लामाबाद
- सवाई जयसिंह मदद मांगने मेवाड़ आ गया

→ 1708 **देबारी समझौता**
- मध्य हुआ
  - मेवाड़
  - आमेर
  - जोधपुर

- मेवाड → शासक अमरसिंह II → पुत्री → चन्द्रकुंवरी
- आमेर → सवाई जयसिंह
- जोधपुर → अजीतसिंह → पुत्री → सूरजकंवरी

चन्द्रकुंवरी, सूरजकंवरी → सवाई जयसिंह से शादी की

⇒ देबारी समझौते के तहत मेवाड के अमरसिंह को ने सवाई जयसिंह को मेवाड वापिस दिलवाए ।

सवाई जयसिंह

- पुत्र → ईश्वरीयसिंह, → माधोसिंह ⟩ इनमें उत्तराधिकारी युद्ध हुआ ।

⇒ **ईश्वरीसिंह** (1743-50)

- → सेनापति ⇒ हरगोविन्द नाटानी
- → शासक बनने के बाद इसका विरोधी **माधोसिंह I** था
- → युद्ध हुआ ⇒ **1743 ई से राजमहल का युद्ध**
  - **ईश्वरीयसिंह** → जीत ✓
    - → साथ दिया → सिंधियाओं ने मिलाजिया
  - **माधोसिंह** → हार
    - → होलकर मराठाओं ने

note ⇒ इस युद्ध की जीत की खुशी में ईश्वरीय सिंह ने जयपुर में सरगासूली / ईसरलाट (जयपुर) का निर्माण करवाया ।

1758 बगरु का युद्ध

- ईश्वरीय सिंह → हार
- माधोसिंह → जीत

note ⇒ ईश्वरीय सिंह मराठों को बड़ीराशी देकर अपने तरफ मिला लिया

⇒ ईश्वरीय सिंह ने मराठों से तंग आकर सरगासूली ईमारत से कूदकर आत्महत्या कर ली 1750 में

note ⇒ राज० का एकमात्र ऐसा राजा जिसने आत्महत्या की थी।

माधोसिंह (1750-1768)

- → इसके काल में सबसे बड़ी समस्या मराठाओं की लूटपाट
- → इसने जयपुर में मराठों का 5000 कत्लेआम करवा दिया।
- → निर्माण करवाया ⇒ मोती डूँगरी गणेश मंदिर (जयपुर)
  - ⇒ शीतला माता मंदिर (चाकसू) जयपुर में बनाया
    - → वाहन ⇒ गधा
    - → पुजारी ⇒ कुम्हार जाति
    - → इसको जिस दिन पूजा जाता है। जिस दिन बासौड़ा मनाया जाता है।
- → युद्ध हुआ ⇒ 1759 में काकोड़ का युद्ध
  - माधोसिंह I → जीत
  - मराठों → हार

⇒ मुगल बादशाह शाहआलम II ने रणथम्भौर दुर्ग (सवाई माधोसिंह) को दे दिया लेकिन कोटा शासक शत्रुशाल विरोधी हो गया

⇒ दोनों के बीच युद्ध हुआ — 1761 भटवाड़ा का युद्ध
- शत्रुशाल → जीत
- माधोसिंह → हार

सवाई प्रतापसिंह 1778-1803

- → निर्माण ⇒ हवामहल (जयपुर) ⇒
  - 5 हवामहल
  - 4 प्रकाश महल
  - 3 विचित्र महल
  - 2 रत्न महल
  - 1 शरद महल
  - → निर्माण करवाया ⇒ 1799
  - → वास्तुकार ⇒ लालचंद उस्ता
  - → आकृति ⇒ कृष्ण के मुकुट के समान
  - → उद्देश्य ⇒ रानियों के तीज/त्यौहार/सवारी देखने के लिए बनाया गया था
- → इसके दरबार में 22 विद्वान रहते थे
  - → इनका संगठन कहलाता था ⇒ गंधर्वबाईसी / गुणीजनखाना
- → इनके संगीत गुरु ⇒ चांद खां
- → स्वयं विद्वान और स्वयं ने ग्रंथ लिखे ⇒ प्रीतिलता + इश्कबतीसी
- → मराठों ने आक्रमण कर दिया ⇒ 1787 तुगां का युद्ध
  - प्रतापसिंह → जीत
  - मराठा → हार

1790 - पाटन का युद्ध

- प्रतापसिंह → हार
- मराठा · डी बोईग → जीत

⇒ इन दोनों के मध्य संधि हुई थी ⇒ **1791 में सांभर की प्रथम संधि**

→ प्रतापसिंह ने इनको हर्जाना दिया और युद्ध पर रोक लगा दी।

⇒ **1800 - मालपुरा का युद्ध**

- प्रतापसिंह → हार
- मराठा → जीत

जगतसिंह (1803-18)

- → प्रेमिका / दासी ⇒ ~~[illegible]~~ रसकपूर
- → उपनाम ⇒ बदनाम शासक
- → इसके काल में विवाद हुआ ⇒ **कृष्णाकुमारी विवाद** ⇒ कृष्णाकुमारी उदयपुर शासक भीमसिंह की पुत्री थी।

↓

1807 गिंगोली का युद्ध

- जोधपुर शासक मानसिंह → हार
- जयपुर शासक जगतसिंह → जीत

भीमसिंह ← बड़ा भाई ← जोधपुर शासक मानसिंह

→ इससे कृष्णाकुमारी की प्रारम्भ में सगाई हुई थी जो अकस्मात मर गया (बिना शादी के)

note ⇒ अमीर खां पिण्डारी के कहने पर भीमसिंह ने कृष्णाकुमारी को जहर देकर मार दिया।

note ⇒ जगतसिंह जयपुर का पहला राजा जिसने अंग्रेजो से संधि की थी।

रामसिंह II (1835-80)

- यह अल्पायु में शासक बना।
- संरक्षक बनाया ⇒ **मेजर लुडलो** ⇒ इसने सर्वप्रथम जयपुर में समाधि प्रथा पर रोक लगाई थी।
- यह 1857 की क्रान्ति के समय जयपुर का शासक था। और अंग्रेजो का वफादार था।
- इसने क्रांति में अंग्रेजो की तन-मन-धन से सहायता की थी।
- उपाधि दी ⇒ **सितार ए हिन्द** ⇒ दी थी ⇒ अंग्रेजो ने और अंग्रेजो ने कोटपूतली की जागीर दी थी।
- 1868 में **जयपुर पर गेरूआ रंग** रंगवाया था।
  - स्टेनले रीड ने पुस्तक The royal town of india. में pinkcity / गुलाबी नगरी कहा।
- निर्माण करवाया ⇒ **राजस्थान स्कूल of art / मदरसा ए हुनरी** 1857 में
  - उद्देश्य ⇒ हुनरमंद लोगों को प्रोत्साहित करना
  - **अल्बर्ट हॉल (जयपुर)**
    - यह प्रिंस अल्बर्ट की याद में 1876 में बनवाया
    - वास्तुकार ⇒ स्टीफन जैकब
  - रामनिवास बाग + रामबाग बनवाया था।

माधोसिंह II (1880-1922)

- उपनाम ⇒ बब्बर शेर
- इसके काल में 1899 में छप्पनिया अकाल पड़ा था।
- इसने नाहरगढ़ दुर्ग में रानियों के लिए एक जैसे 9 महल बनवाए
- इसने चन्द्रमहल में एशिया के दो सबसे बड़े चाँदी पात्र रखवाए
- इसने चन्द्रमहल में मुबारक महल बनवाया था।
  - प्रसिद्ध था ⇒ मेहमानवाजी के लिए
- इसने 1909 में निर्मित बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण में 5 लाख रुपये दान किए थे।

अन्तिम शासक ⇒ **मानसिंह II (1922-1956)**

- एकीकरण / स्वतंत्रता के समय जयपुर का शासक था।
- इसे राजस्थान का अन्तिम राजप्रमुख बनाया था।
  - इसके स्थान पर नया पद चलाया। ⇒ राज्यपाल
  - राज० का प्रथम राज्यपाल बनाया ⇒ गुरुमुखनिहालसिंह को